आपने लिखा

शैक्षणिक संदर्भ, अंक 96 में मोहम्मद ज़फर जी का लेख 'जवाब देने से भी ज़रूरी है सवाल पूछना' पढ़ा। लेख बहुत ही पसन्द आया। वास्तव में कक्षा में बच्चों द्वारा सवाल पूछे जाने की अहमियत से इंकार नहीं किया जा सकता।

इस विषय में अपने स्वयं के अनुभव के बारे में कुछ कहना चाहूँगा। मैं गणित का शिक्षक हूँ। कक्षा में गणित के प्रश्न हल करवाते वक्त बिना छात्रों से प्रश्न पूछे मैं एक स्टेप से दूसरे स्टेप में जाता ही नहीं, चाहे कितनी ही देर क्यों न हो जाए। जब छात्र को सिद्धान्त मालूम है, तब उससे जुड़े प्रश्न का उत्तर तो उसे देना ही होगा।

एक बार मैं कक्षा में एक प्रश्न हल करवा रहा था। एक स्टेप पर आकर मैंने एक प्रश्न पूछा ताकि दूसरे स्टेप पर जाया जा सके। पूरी कक्षा में किसी ने जवाब नहीं दिया, जबकि उत्तर उनके ज्ञान की परिधि के भीतर का था। मैंने कहा कि कोई बात नहीं, कल बताना। दूसरे दिन मैंने पूछा, "हाँ, तो उत्तर मिला?" पूरी कक्षा फिर मौन थी। अन्त में चौथे दिन बच्चों ने सवाल का जवाब दिया और मैंने अगले स्टेप की शुरुआत की। तो, बात यह नहीं थी कि बच्चों को उस प्रश्न का जवाब मालूम नहीं था। वे सोचना नहीं चाहते थे।

एक और उदाहरण देखते हैं - कक्षा में बीजगणित का एक समीकरण हल करवाया जा रहा है।

शिक्षक - समीकरण $3x - 5 = x + 2$

हमें हल करना है।

छात्र - यस सर।

शिक्षक - जब x बाईं ओर जाएगा तो उसका चिन्ह ऋणात्मक और -5 दाईं ओर जाएगा तब उसका चिन्ह धनात्मक हो जाएगा। हो जाएगा ना?

छात्र - यस सर।

शिक्षक - $3x - x = 5 + 2$,

अब 3x में x को घटाएँगे तो 2x बचेगा? दाएँ पक्ष में 5 और 2 जुड़ कर 7 हो जाएँगे, ठीक है?

छात्र - यस सर।

शिक्षक - अब $2x = 7$ में 2, 7 के हर में चला जाएगा और इस प्रकार x का मान कितना प्राप्त होगा? 7/2 ठीक है?

छात्र - यस सर।

आप देख रहे हैं कि इस पूरी प्रक्रिया में समूचे वार्तालाप में छात्र का मात्र एक ही कार्य है और वह है, आँखें मूँद कर 'यस सर' कहना।

मेरा कहना है कि जब आप कहते हैं, '3x में x को घटाएँगे तो क्या बचेगा', तब आप थोड़ा रुकिए तो! बच्चे को तो जवाब देने दीजिए। आप स्वयं ही उत्तर क्यों दे देते हैं? छात्र तो 'यस सर' बोलने के लिए तैयार ही बैठा होता है।

यदि हम छात्रों को बोलने का मौका नहीं देंगे तो फिर उनकी समझ मज़बूत किस प्रकार होगी?

मिलिन्द साव
व्याख्याता (गणित),
राजनांदगाँव, छत्तीसगढ़